Chap- 9

अध्याय-नवम्

उपसंहार

महत्त्व और उपादेयता

:: उपसंहार ::

प्रसाद जी भारतीय साहित्यकारों में ही नहीं अपितु विश्व साहित्यकारों में भी बहुत ही उच्च व सम्मानित स्थान के अधिकारी हैं। प्रसाद जी अपने कृतित्व में महान हैं और उनका व्यक्तित्व भी श्रेष्ठ कलाकारों के समान है। वे आधुनिक हिन्दी साहित्य की वह विभूति हैं जिनके काव्य पर आज हिन्दी वाले गौरव करते हैं। वे मूलत: भारतीय परम्परा के ही कवि हैं। वे काव्य और शास्त्रों के मर्मज्ञ थे। प्रसाद जी ने भारतीय काव्यशास्त्र के सिद्धान्तों का गहन अध्ययन किया था। वे युग के प्रति भी बहुत सचेत थे। इसके अतिरिक्त देश- विदेश में प्रचलित विभिन्न चिंतन -धाराओं के भी अच्छे जानकार थे। प्रसाद जी सचेत कलाकार भी थे। वे अपने वातावरण से संकेत ग्रहण करके उनको अपनी भावनाओं से भरने की क्षमता ही नहीं रखते थे अपितु भविष्य के चिन्तन को भी अच्छी तरह पहचान सकते थे। इनका साहित्य सच्चे अर्थों में नवीन जीवन से सम्बंधित है जिसमें इन्होंने आधुनिक समस्याओं को चित्रित किया है। आचार्य नन्ददुलारे बाजपेयी के शब्दों में -`प्रसाद जी एक नए साहित्य युग के निर्माता ही नहीं, एक नई रचना शैली और नव्य दर्शन के उद्भावक भी हैं। उनमें अपने युग की प्रगतिशीलता प्रचुर मात्रा में पायी जाती है। यही नहीं वे एक बड़ी हद तक भविष्य द्रष्टा और आगम के विधायक कलाकार हैं। सभी महान साहित्यकारों की भांति उन्होंने अपने युग की प्रगतिशील शक्तियों को पहचाना और उन्हें अभिव्यक्ति दी। सामाजिक और सांस्कृतिक उत्थान सदैव नीचे स्तरों से होता है इसलिए प्रसाद जी ने बहिष्कृतों, अपाहिजों और विशेषकर अबलाओं का साथ दिया। प्रसाद जी कोरी कल्पना में डूबने वाले व्यक्ति नहीं थे वे एक सजग द्रष्टा और उपाय निरूपक स्मृतिकार भी थे। कलाकार की हैसियत से उन्होंने उदात्त और शक्तिशाली भावनाओं तथा जीवनमय चरित्रों का निर्माण किया।`[१]

हर कलाकार अपने पूर्वकाल और समकालीन साहित्य से अवश्य ही प्रभावित होता है। प्रसाद जी पर भी अपने पूर्ववर्ती और समकालीन साहित्यकारों का प्रभाव दृष्टिगोचर होता है। वे संस्कृत कवि कालिदास, भारवि और बंगला कवि रविन्द्रनाथ टैगोर से बहुत ही प्रभावित रहे हैं। पाश्चात्य कवियों जैसे - बायरन, शैली और कीट्स ने भी इन्हें प्रभावित किया है। वे भारतीय कवियों बाल्मीकि, कालिदास तथा तुलसी की परम्परा के अमर कवि हैं। जिनका महत्त्व दिन-प्रतिदिन और अधिक बढ़ता रहा है।

महाकवि जयशंकर प्रसाद का हिन्दी साहित्य में पदार्पण भारतीय इतिहास की एक चिरस्मरणीय घटना है। वे आधुनिक हिन्दी साहित्य के महान कवि हैं। इनका नाम उन महान कवियों में आता है जिन्हें युग प्रवर्तक कहलाने का श्रेय प्राप्त है। उनकी प्रतिभा बहुमुखी है। साहित्य का शायद ही ऐसा कोई क्षेत्र शेष बचा हो जिसमें इन्होंने अपनी बहुमुखी प्रतिभा का कमाल न दिखाया हो। प्रसाद जी ने बाल्यावस्था में ही उपनिषदों और वैदिक साहित्य का गहन अध्ययन कर लिया था। नौ वर्ष की आयु में ही लघु कौमुदी और अमरकोश को कंठस्थ कर लिया था। उर्दू, फारसी, संस्कृत, और अंग्रेजी का उन्हें अच्छा ज्ञान था। प्रसाद जी ने भारतीय और यूरोपीय दर्शन, ज्योतिष, तंत्र साहित्य, प्राचीन भारतीय इतिहास, साहित्य शास्त्र और सौंदर्यशास्त्र का भी अध्ययन किया था। यह सब प्रसाद जी की बहुमुखी प्रतिभा का ही प्रमाण है।

प्रसाद जी ने कविता, नाटक, कहानी, निबंध और उपन्यास- सभी विधाओं पर लेखनी चलायी। इन सबमें उच्च कोटि की सफल रचनायें लिखकर उन्हें समृद्ध बनाया। यही कारण है कि साहित्य जगत इन्हें सफल निबन्धकार

कहानीकार, उपन्यासकार और नाटककार के रूप में जानता है। प्रसाद जी प्रधानत: कवि हैं। इनका कवि रूप ही प्रमुख रहा है। इन्हें सबसे अधिक ख्याति इसी रूप में मिली है। `चित्राधार` से लेकर `कामायनी` तक वे निरन्तर आगे बढ़ते गये। `आँसू` प्रसाद जी की एक विशिष्ट रचना है। महान कृति `कामायनी` हिन्दी साहित्य की अमूल्य निधि है। सभी दृष्टियों से यह एक सफल महाकाव्य है।

प्रसाद जी ने भारतेन्दु युग के अन्तिम चरण (१८९८ ई०) में काव्य रचना करना प्रारंभ कर दिया था। इन्होंने नियमित रूप से काव्य रचना बीसवीं शताब्दी के प्रारंभ में शुरू की। इनका पदार्पण हिन्दी में एक नयी दिशा का सूचक था। उनके प्रारंभिक साहित्य पर भारतेन्दु तथा भारतेन्दु युग का पर्याप्त प्रभाव स्पष्ट दिखाई देता है। भारतेन्दु से प्रभावित होकर ही इन्होंने `उर्वशी`, `बभ्रुवाहन`, नामक दो चम्पू, `अयोध्या का उद्धार`, `वन मिलन`, `प्रेमराज्य`, `प्रेमपथिक` नामक प्रबन्धात्मक काव्य, २२ पद्य निबंध लिखे जैसे- `भारतेन्दु प्रकाश`, `बिदाई`, `मानस`, `शरदपूर्णिमा` जो कि उनकी काव्यकृति `चित्राधार` में पराग शीर्षक के अन्तर्गत निहित है। ऐतिहासिक नाटक `प्रायश्चित` और सम्राट सप्तम एडवर्ड की मृत्यु पर लिखा गया। शोक काव्य `शोकोच्छ्वास` भी भारतेन्दु की परंपरा का ही पालन है। उस युग में ब्रजभाषा की श्रृंगार प्रधान और समस्यापूर्ति कविताओं का विशेष प्रचलन था। प्रसाद जी ने `चित्राधार` काव्य के द्वितीय संस्करण में `मकरन्द बिन्दु` शीर्षक के अन्तर्गत अनेक श्रृंगार प्रधान और समस्यापूर्ति कविताओं को प्रस्तुत किया है।

जिस समय इन्होंने हिन्दी साहित्य में पदार्पण किया था। उस समय

गद्य के लिए खड़ी बोली और पद्य के लिए ब्रजभाषा ही उपयुक्त समझी जाती थी । प्रसाद जी ने भी परंपरा का अनुसरण करते हुए काव्य रचना ब्रजभाषा में ही शुरू की । परन्तु धीरे- धीरे ब्रजभाषा के स्थान पर खड़ी बोली का प्रयोग होने लगा जिसके विकास क्र में आचार्य महावीर प्रसाद द्विवेदी जी ने महत्त्वपूर्ण योगदान दिया । प्रसाद जी ने भी परिस्थितियों के अनुरूप खड़ी बोली में ही काव्य रचना करना प्रारंभ कर दिया । इनके काव्य में द्विवेदी काल की इतिवृत्तात्मकता तथा बौद्धिकता के भी दर्शन होते हैं ।

परन्तु धीरे- धीरे प्रसाद जी ने परंपरा का परित्याग कर अपना मार्ग स्वयं बनाना प्रारंभ कर दिया । द्विवेदीकाल की स्थूलता और इतिवृत्तात्मकता के विरोध में छायावाद काल का उदय हुआ । जिसका चरम विकास प्रसाद जी में दिखायी देता है । प्रसाद, निराला, पंत आदि इस छायावादी काव्यधारा के प्रमुख कवि हैं । प्रसाद जी को इस युग का प्रवर्तक माना जाता है क्योंकि इनके काव्य में ही सर्वप्रथम छायावादी प्रवृत्तियों के दर्शन होते हैं । प्रसाद जी की काव्यकृति 'झरना' को इस युग की प्रथम प्रयोगशाला कहकर सम्बोधित किया जाता है । जबकि कुछ विद्वान मैथिलीशरण गुप्त, माखनलाल चतुर्वेदी या मुकुटधर पांडेय को छायावाद का प्रवर्तक मानते हैं । परन्तु यह मत युक्तिसंगत प्रतीत नहीं होती क्योंकि प्रसाद जी की रचनायें(जिनमें छायावादी प्रवृत्तियाँ पायी जाती हैं) इन कवियों से पहले की हैं । इस प्रकार से प्रसाद जी ही छायावाद के प्रवंतक सिद्ध होते हैं । नन्ददुलारे बाजपेयी जी ने ठीक ही लिखा है - 'वे (प्रसाद जी) जितने हैं , और जो कुछ हैं, हमें उतने ही से प्रयोजन है । उतने गुणों में भी वे महान और युग प्रवर्तक सिद्ध होते हैं ।'[२] डॉ० प्रेमशंकर का मत है -'उतनी क्षमता का कोई दूसरा कलाकार हिन्दी साहित्य के इस युग में दिखायी नही देता । इस प्रकार वे युग के प्रवर्तक ही नहीं, उनकी सर्वश्रेष्ठ विभूति भी सिद्ध होते हैं ।'[३]

प्रसाद जी सौंदर्यवादी कवि हैं। इन्होंनें अपने काव्य में सौंदर्य तत्व को सर्वोच्च स्थान दिया है। इनकी सौंदर्य चेतना बहुत ही समृद्ध है। इसका आभास हमें मानवीय सौंदर्य निरूपण में दिखायी देता है। मानवीय सौन्दर्य के वे कुशल कलाकार हैं। मानवीय सौंदर्य के अन्तर्गत नारी, पुरुष और बाल सौंदर्य का विवेचन किया है। उनकी मनोवृत्ति नारी सौन्दर्य में ही अधिक रमी है। नारी सौंदर्य के अनेक सुन्दर चित्र इनके काव्य में बिखरे पड़े हैं। इन्होंने सौंदर्य निरूपण में नारी के बाह्य रूप और अंग-प्रत्यंग का वर्णन ही नहीं किया अपितु अन्त: सौंदर्य के भी कितने ही आह्लादकारी चित्र प्रस्तुत किए हैं। नारी के बाह्य रूप वर्णन में प्राचीन नखशिख, परम्परा के साथ-साथ नवीन चित्रों की भी सुन्दर छटा देखने को मिलती है। प्रसाद जी ने मुख को चन्द्रमा के समान, आँख की पुतलियों को नीलम की नाव, नासिका को तोते के समान, कानों को कोमल पत्तों के समान और भुजाओं को कहीं पर कामदेव के धनुष की डोरियाँ कहा है तो कहीं पर पवन में मस्ती से झूमती हुई लताएं। बाह्य रूप वर्णन के साथ-साथ प्रसाद जी ने नारी के आन्तरिक गुणों का भी विवेचन प्रस्तुत किया है। नारी गुणों की खान है। दया, माया, ममता, त्याग, आत्मसमर्पण, सहनशीलता और करुणा की भावना तो उसमें कूट- कूट कर भरी होती है। वह हमेशा दूसरों को देती है और देने के बदले कुछ नहीं लेती। नारी सौंदर्य के साथ-साथ प्रसाद जी ने पुरुष सौंदर्य के भी रमणीय चित्र प्रस्तुत किए हैं। परन्तु पुरुष सौंदर्य का चित्रण अधिक विस्तार से नहीं किया। पुरुष सौंदर्य में भी उन्होंनें उसके बाह्य व आन्तरिक दोनों ही रूपों का चित्रण किया है। पुरुष के सुगठित और बलिष्ठ अंगों ने तो प्रसाद जी को बहुत ही आकर्षित किया है। एक ओर जहाँ पुरुष तेज, शक्ति, साहस, वीरता, परोपकार, अहिंसा, त्याग और आत्मसम्मान

जैसे गुणों का भण्डार है वही दूसरी ओर उसमें कुछ अवगुण भी होते हैं जैसे विलासप्रियता, स्वार्थभावना, ईर्ष्या और अधिकार-लिप्सा इत्यादि । इन अवगुणों का भी पुरुष जीवन में विशेष महत्त्व होता है । इस प्रकार प्रसाद जी ने पुरुष में पौरुष और नारी में सुकुमारता को स्थान दिया है ।

वस्तुगत सौंदर्य के अन्तर्गत नगर, भवन, कुटिया इत्यादि का सौंदर्य निरूपण किया है । किन्तु इस प्रकार के वर्णन अपेक्षाकृत कम ही हैं । कलागत सौंदर्य की दृष्टि से तो प्रसाद जी का काव्य काफी समृद्ध है । भाषा की दृष्टि से प्रसाद जी का योगदान अविस्मरणीय है । इनका भाषा पर पूर्ण अधिकार है । उनकी भाषा में नवीनता है, इन्होंने भाषा को लालित्य और माधुर्य गुणों से युक्त बनाया । इन्होंने शब्दों को नई भाव- चेतना और नयी अर्थवत्ता प्रदान की । खड़ी बोली का सर्वोत्तम रूप उनके काव्य में दिखायी पड़ता है । यही कारण है कि आज प्रसाद जी खड़ी बोली के सर्वश्रेष्ठ महाकवि के रूप में जाने जाते हैं । इनका शब्द भण्डार बहुत ही व्यापक है । तत्सम, तद्भव और देशज इत्यादि शब्दों का खुलकर प्रयोग किया है । विदेशी शब्दों का भी इन्होंने कहीं- कहीं प्रयोग किया है । एक ओर जहाँ प्रसाद जी ने पुराने शब्दों का प्रयोग किया है वहीं दूसरी ओर नये शब्दों का गठन भी अपने काव्य में किया है । लोकोक्तियों और मुहावरों के प्रयोग से भाषा और भी प्रभावशाली बन गयी है । छन्दों और अलंकारों की छटा ने प्रसाद जी के काव्य को और भी सुन्दर बना दिया है । अलंकारों ने भी प्रसाद काव्य के सौंदर्य में अभिवृद्धि ही की है । विभिन्न अलंकार प्रयोगों के द्वारा प्रसाद काव्य में मार्मिकता और विविधता दृष्टिगत होती है । डॉ० रामेश्वरलाल खण्डेलवाल के शब्दों में -"प्रसाद जी ने अलंकारों के प्रयोग में परिष्कृत रुचि व सिद्धहस्ता का परिचय दिया है । उपमा, रूपक, उत्प्रेक्षा आदि के प्रयोगों

में उन्होंने अनेक उपमानों के बीच आकृतिगत साम्य और गुणसाम्य दोनों का पूरा-पूरा ध्यान रखा है। आकृतिगत साम्य कहीं भी हास्यस्पद नहीं मिलेगा।"[4]

इनके काव्य में शब्द शक्तियों का अपार वैभव है। प्रसाद जी ने हिंदी के प्राचीन एवं नवीन छन्दों का प्रयोग किया है। इसके अतिरिक्त बंगला और अंग्रेजी छन्दों को भी काव्य में समाविष्ट किया है। इतना ही नहीं आवश्यकता पड़ने पर दो भिन्न छन्दों का मिश्रण करके एक नवीन छन्द की सृष्टि भी की है। `आँसू` काव्य आँसू अथवा आनन्द छन्द में लिखा गया है जो कि प्रसाद निर्मित छन्द है। इसके अतिरिक्त `कामायनी` के इड़ा, रहस्य और आनन्द सर्ग में प्रसाद जी ने स्वनिर्मित छन्दों का ही प्रयोग किया है। उन्होंने विभिन्न छन्दों की मात्रायें घटा- बढ़ाकर अपने अनुकूल बना लिया है। यह प्रसाद जी की बहुमुखी प्रतिभा द्वारा ही सम्भव हो पाया है।

प्रकृति और मनुष्य में घनिष्ठ सम्बन्ध है। महान कवियों की अधिकांश कवितायें प्रकृति की गोद में ही बैठकर लिखी गयी हैं। प्रकृति सौंदर्य ने तो प्रसाद जी को विशेष रूप से आकर्षित किया है। उन्हें तो प्रकृति से विशेष लगाव रहा है। उनकी अधिकांश कवितायें प्रकृति को ही लेकर लिखी गयी हैं। प्रसाद जी ने अपने काव्य में प्रकृति के एक से एक सुन्दर चित्र अंकित किए हैं। यह उनके काव्य का आवश्यक अंग रही है। द्विवेदी युग प्रकृति चित्रण की दृष्टि से बहुत समृद्ध नहीं कहा जा सकता। उसमें तल्लीनता का अभाव है। प्रकृति के ऊपरी रूप का चित्रण अधिक हुआ है। उसकी अन्तरात्मा तक पहुँचने में कवि सफल नहीं हो पाया है। प्रसाद जी ने प्रकृति के परम्परागत रूप से कुछ हटकर नवीन रूप में प्रस्तुत किया है। प्रसाद जी ही ऐसे पहले कवि हैं जिनकी व्यापक दृष्टि प्रकृति सौंदर्य की ओर गयी है। उपाध्याय जी इस विषय में लिखते हैं -

"प्रकृति में सौंदर्य और सत्य देखने की छायावादी प्रवृत्ति सर्वप्रथम सैद्धांतिक आधार के साथ प्रसाद जी में दिखायी पड़ती है।"[५] आचार्य नन्ददुलारे बाजपेयी ने भी इसी प्रकार का मत व्यक्त किया है।[६] प्रसाद जी के काव्य में प्रकृति का वर्णन अधिकतर मानवीकरण रूप में हुआ है। प्रकृति भी मानवीय आंगिक चेष्टाओं और संवेदनाओं से युक्त है। वह भी मनुष्य की भांति हँसती, रोती, गाती और मुस्कराती है। छायावाद से पूर्व किसी भी काल में प्रकृति का इस रूप में चित्रण नहीं हुआ। प्रसाद जी ने अपने बाल्यकाल में अमरकण्टक और महोदधि आदि स्थानों की यात्रा की थी। इस यात्रा के दौरान उन्होंने जो प्रकृति सौंदर्य देखा उसी के आधार पर उन्होंने अपने काव्य में प्रकृति के रमणीय चित्र प्रस्तुत किए हैं। प्रकृति के कोमल रूप के साथ-साथ उसके भयानक रूप का भी चित्रण किया है।

प्रसाद काव्य का प्रधान आकर्षण उसकी बिंब योजना है। उनके बिंबों का क्षेत्र अत्यन्त विस्तृत है। इसमें इन्होंने नवीनता को ही दर्शाया है। प्रसाद जी ने इनको इस रूप में चित्रित किया है कि इ उसका स्पष्ट बिंब पाठक के मानस में प्रस्तुत हो जाता है। प्रकृति और मानस प्रसाद जी के बिंबों के मुख्य स्रोत हैं। उन्होंने अधिकतर बिंब प्रकृति और मानव जीवन से ही ग्रहण किए हैं। प्रसाद जी ने बिंब योजना में भी सभी तरह की शिल्पविधियों और कल्पना की सभी शक्तियों का प्रयोग किया है। इसी का परिणाम है कि प्रसाद जी के काव्य में बिंब पूर्णतया सजीव और स्पष्ट हैं। ऐन्द्रियता बिंब का एक अनिवार्य गुण है। इसी के आधार पर प्रसाद जी ने बिंबों का एक विशाल वर्गीकरण प्रस्तुत किया है। ऐन्द्रिय बिंबों में भी चाक्षुष बिंबों की तो प्रसाद काव्य में भरमार है। इसके अतिरिक्त शब्द बिंब, वर्ण बिंब, समानुभूतिक बिंब, व्यंजनाप्रवण सामासिक बिंब और प्रसृत बिंबों की भी रमणीय छटा कहीं-कहीं

दिखायी देती है । सज्जात्मक बिंब, उदात्त बिंब, संवेदनात्मक बिंब, वस्तु प्रधान बिंब, घनात्मक बिंब, विस्तार प्रधान बिंब और नाद प्रधान बिंब का भी प्रसाद काव्य में विशेष महत्त्व है ।

प्रतीक विधान की दृष्टि से प्रसाद जी का काव्य बहुत ही महत्त्वपूर्ण है । इन्होंने प्रतीक को विशेष महत्त्व प्रदान किया । इन्होंने इस क्षेत्र में अद्भुत कौशलता का परिचय दिया है । उनके प्रतीकों में गहराई अधिक है । उन्होंने प्रतीक प्रयोग में जो अर्थ की गरिमा भर दी है उनका अपना अलग ही महत्त्व है । प्रसाद जी के प्रतीक सूक्ष्म भावों को अभिव्यक्त करने में बहुत ही सफल सिद्ध हुए हैं । उन्होंने अधिकतर प्रतीक प्रकृति के विशाल क्षेत्र से ही ग्रहण किए हैं । उनकी रचनाओं जैसे- 'झरना', 'आँसू' और 'कामायनी' के पात्र जैसे मनु, श्रद्धा और इड़ा के नाम भी प्रतीकात्मक ही हैं । कविताओं के अतिरिक्त कहानी और नाटकों में भी अनेक स्थलों पर प्रतीकों का ही सहारा लिया गया है । प्रसाद जी के काव्य में प्रतीक के विविध रूप दृष्टिगोचर होते हैं । स्वरूप की दृष्टि से इनके काव्य में चार तरह के प्रतीक प्राप्त होते हैं जैसे- अमूर्त प्रस्तुत के लिए मूर्त प्रतीक, मूर्त प्रस्तुत के लिए मूर्त प्रतीक, अमूर्त प्रस्तुत के लिए अमूर्त प्रतीक और मूर्त प्रस्तुत के लिए अमूर्त प्रतीक । इस प्रकार के प्रतीक प्रसाद काव्य में बड़ी ही प्रचुरता में मिलते हैं । सार्वभौम, देशगत, परम्परागत, व्यक्तिगत या नवीन, युगगत और भावात्मक प्रतीकों की संख्या भी पर्याप्त है । इनके प्रतीकों में जहाँ एक ओर परम्परा है वहीं दूसरी ओर उनमें नवीनता भी है । इन प्रतीकों के अतिरिक्त लाक्षणिक और व्यंजनागर्भी प्रतीकों का भी प्रयोग किया है । रूपात्मक प्रतीक, गुण-भाव-स्वभावात्मक प्रतीक, क्रियात्मक प्रतीक और मिश्र प्रतीक की भी सुन्दर छटा दिखायी देती है । इन सब प्रतीकों ने मिलकर प्रसाद जी के काव्य की उत्कर्षता को बढ़ाया ही है ।

प्रसाद जी के काव्य में कल्पना तत्त्व की भी प्रधानता है । उन्होंने अपने काव्य में कल्पना को सर्वोपरि स्थान प्रदान किया है । काव्य में कल्पना के जितने विविध प्रयोग सम्भव हो सकते हैं वे सभी प्रसाद काव्य में विद्यमान हैं । इस कल्पना शक्ति के सहारे ही प्रसाद जी विषय के अन्तरंग में प्रविष्ट होने में सफल हो पाये हैं । समय और परिस्थिति के अनुसार इनकी कल्पना में भी परिवर्तन होता रहा है । इनकी कल्पना भावानुकूल है । इस तत्त्व के सहारे ही इन्होंने घटनाओं की अन्विति की है और पात्रों के व्यक्तित्व को उत्कर्षता प्रदान की है । इसी कल्पना शक्ति के द्वारा ही वह रमणीय चित्र प्रस्तुत करने में सफल हो पाये हैं । 'चित्राधार' से लेकर 'कामायनी' तक इन्होंने कल्पना का सुन्दर प्रयोग किया है । 'कामायनी' काव्य प्रसाद जी की कल्पना शक्ति का सर्वोत्तम उदाहरण है । उसकी कथा का प्रसंग वैदिक है । इस वैदिक प्रसंग को महाकाव्य रूप में प्रस्तुत करने का कार्य उनकी कल्पना शक्ति द्वारा ही संभव हो पाया है । प्रसाद काव्य में कल्पना मुख्य रूप से दो रूपों में प्राप्त होती है । पुनर्निमायक कल्पना और रचनात्मक कल्पना । पुनर्निमायक कल्पना के तीन भेद हैं - स्मृति-निर्भर कल्पना, स्मृत्याभास-निर्भर कल्पना और प्रत्यभिज्ञाश्रित कल्पना के उदाहरण भी कहीं- कहीं दिखायी पड़ते हैं । रचनात्मक कल्पना के भी कई भेदों जैसे- विभाव विधायक कल्पना, तद्भव कल्पना, अनुमानाश्रित कल्पना, सृजनात्मक कल्पना और मुक्तयादृच्छिकी कल्पना का भी प्रयोग किया गया है । उत्पादक कल्पना के कई भेद दृष्टिगोचर होते हैं जैसे- सावयव कल्पना, सादृश्य -निर्भर कल्पना, उदात्त कल्पना, विभावनशील कल्पना और मानवीकरण-निर्भर कल्पना । इनके अतिरिक्त प्रकृति कल्पना, प्रेम और सौंदर्य सम्बंधी कल्पना, वायवी कल्पना और कलापक्ष से सम्बंधित कल्पना के उदाहरण भी प्रचुरता में प्राप्त होते हैं ।

प्रसाद काव्य में मिथक का भी विशेष महत्त्व है । यह मिथक ही

परंपरा से प्राप्त मान्यताओं, संस्कारों और धार्मिक अनुष्ठानों की व्याख्या प्रस्तुत करता है। इसके अतिरिक्त रहस्यमयी प्राकृतिक घटनाओं की व्याख्या भी इन्हीं मिथकों से प्राप्त होती है। हिन्दी साहित्य में अनेक प्रसिद्ध कवियों जैसे हरिऔध, मैथिलीशरण गुप्त, नवीन जी, अनूप शर्मा, निराला जी, गिरिजादत्त शुक्ल, सोहनलाल द्विवेदी, दिनकर, अज्ञेय, रामकुमार वर्मा, धर्मवीर भारती, नरेन्द्र शर्मा, नरेश मेहता और उदयशंकर भट्ट ने विभिन्न मिथकीय प्रसंगों को आधार बनाकर कवितायें लिखी हैं। प्रसाद जी के काव्य में भी अनेक स्थलों पर मिथकों के सुन्दर एवं सटीक प्रयोग दिखायी देते हैं। उनकी प्रथम काव्य रचना 'चित्राधार' में जो 'उर्वशी' शीर्षक चंपू है उसका आधार मिथकीय घटना ही है। 'करुणालय' की कथा भी मिथकीय प्रसंग को लेकर ही लिखी गयी है। हिंदी साहित्य की सर्वश्रेष्ठ महान कृति 'कामायनी' में तो मिथकीय प्रसंगों की भरमार है। जैसे- जलप्लावन, देवसंस्कृति, देवासुर संग्राम, त्रिपुर संहार व इत्यादि का आधार मिथकीय प्रसंग ही है।

निष्कर्ष रूप से कहा जा सकता है प्रसाद जी का काव्य सौंदर्यशास्त्र की दृष्टि से अत्यन्त समृद्ध तथा सम्पन्न काव्य है। उन्होंने जहाँ एक ओर छंदों के नवीन प्रयोग, नवीन शब्दों का चयन और भाषा की नयी अर्थवत्ता का सौंदर्य प्रदान किया वहीं कल्पना, बिंब, प्रतीक और मिथक की दृष्टि से भी काव्य सौंदर्य को समृद्ध और पुष्ट किया है।

--

सन्दर्भ :

१- आचार्य नन्ददुलारे बाजपेयी : जयशंकर प्रसाद, पृ० २

२- प्रो० रा०तु०भगत और डॉ० सरजूप्रसाद मिश्र, आधुनिक हिन्दी कविता के चार दशक : पृ० १३४ से उद्धृत ।

३- डॉ० प्रेमशंकर , प्रसाद का काव्य, पृ० १७

४- डॉ० रामेश्वरलाल खण्डेलवाल, जयशंकर प्रसाद : वस्तु और कला, पृ०३७८

५- डॉ० विश्वम्भरनाथ उपाध्याय : आधुनिक हिंदी कविता: सिद्धान्त और समीक्षा : पृ० १७६

६- आचार्य नन्ददुलारे बाजपेयी : जयशंकर प्रसाद, पृ० ६७